Downfall of Gupta Empire

छठी शताब्दी तक गुप्त साम्राज्य छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हो गया। इस साम्राज्य के पतन के कई कारण थे।

गुप्त सम्राटों का दुर्बल व्यक्तित्व

गुप्त साम्राज्य के पतन का पहला कारण बाद के आनेवाले गुप्त सम्राटों का दुर्बल व्यक्तित्व है। किसी भी बड़े साम्राज्य को शक्तिशाली एवं एकत्रित रखने के लिये एक शक्तिशाली और कुशल शासक का होना आवश्यक है। पश्चात् के सभी सम्राट विशेषकर बुद्धगुप्त और बालादित्य गुप्त कायर स्वभाव के थे। इनका झुकाव भी बौद्धधर्म की ओर था। बालादित्य के विषय में कहा जाता है कि जब उसने हूण शासक मिहिरकुल के बारे में सुना तो उसने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार कर लिया कि उसके पास इतना साहस नहीं है कि वह अपने शत्रु का प्रतिरोध कर सके। उन शक्तिहीन शासकों के कारण साम्राज्य के अन्दर केन्द्रविमुख शक्तियों को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला।

सिंहासन के लिये संघर्ष :- गुप्त साम्राज्य के पतन का दूसरा कारण गुप्त सिंहासन के उम्मीदवारों के बीच आन्तरिक संघर्ष है। विशेषकर स्कन्दगुप्त के बाद राज्य गद्दी के लिये संघर्ष आरम्भ हुआ, इस बात की पूरी संभावना है कि गुप्त साम्राज्य के दरबार षडयन्त्र और आपसी झगड़ा चला होगा। क्योंकि गुप्त उत्तराधिकारियों के अधिकार को नहीं माना गया था और इन्हें सिंहासन ग्रहण करने से वंचित कर दिया गया था, गुप्तकाल के सिक्के से यही ज्ञात होता है कि पाँचवीं शताब्दी के अन्त में दो गुप्त शासक एक ही समय शासन कर रहे थे।

आर्थिक कुप्रबंध

यह देखा जाता है कि बाद वाले गुप्त सम्राट अति विलासपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे जिससे निश्चित रूप से गुप्त राजकोष पर आर्थिक दबाव पड़ रहा होगा। गुप्त राजकोष इस समय स्वतः ही हूण आक्रमण के कारण रिक्त हो गया था, उसे पूर्ण करने का प्रयास न कर यह गुप्त सम्राट अवशेष को भी चूस रहे थे।

हूण आक्रमण से गुप्त साम्राज्य को काफी क्षति पहुँची थी। यद्यपि आक्रमणकारियों को विफल करने में गुप्त साम्राज्य सफल रहा फिर भी उन्हें रोकने में गुप्तों को जान की बाजी लगा देनी पड़ी। हूण आक्रमण से क्षति मुख्यतः गुप्त साम्राज्य के अर्थ व्यवस्था को हुई थी। इससे गुप्त साम्राज्य का रोमन साम्राज्य से व्यापार सम्बंध टूट गया था। स्कन्दगुप्त के पश्चात् मिलावट वाले सिक्कों से ज्ञात होता है कि गुप्तकालीन की आर्थिक दशा कमजोर हो गयी थी। बालादित्य के समय हूण आक्रमण से इस आर्थिक विघटन की प्रक्रिया और भी गतिशील हो गई थी।

फिर भी डॉ. R.C. Mazumder हूण आक्रमण को गुप्त साम्राज्य के पतन का कारण नहीं मानते हैं। उनके अनुसार कुछ ऐतिहासिक स्रोतों से पता चलता है कि गुप्त साम्राज्य का अन्त इसके लालची सामन्तों ने किया था न कि हूण आक्रमणकारियों ने। वे यह भी बताते हैं कि कोई विशेष क्षति पहुँचाने के पहले ही हूण आक्रमण निष्क्रिय हो चुका था।

सामन्तों का विद्रोह

गुप्त साम्राज्य के पतन का तात्कालिक कारण सामन्तों का विद्रोह था। कुमारगुप्त के समय विन्ध्य के पुष्यमित्रों ने राज्य में उपद्रव मचाया और बालादित्य के समय मन्दसौर (मालवा) के यशोधर्मन ने अपने आपको स्वाधीन घोषित कर दिया था। इस उदाहरण से अन्य पराधीन नरेशों को भी प्रोत्साहन मिला। अतः वल्लभी के मैत्रकों ने, मगध के गुप्तों ने, दोआब क्षेत्र (गंगा यमुना) के मौखरियों ने और बंगाल के गौड़ों ने अपने को आजाद कर लिया। इस प्रकार केन्द्र विरोधी शक्तियों के उत्थान से छठी शताब्दी के अन्त तक गुप्त साम्राज्य पूरी तरह छिन्न भिन्न हो गया।

उपरोक्त सारे केन्द्रविमुख शक्तियों के उदय का पहला कारण गुप्त शासन की मुक्तिदान प्रणाली थी। इस काल में ब्राह्मणों और प्रशासकों को क्रमशः उनकी तपस्या और वेतन के रूप में उन्हें अनेक मुक्तिदान दिये गये। यह सभी मुक्तिदान विकेन्द्रीकरण की शक्तियों से भरपूर थे। ऐसी सभी मुक्तिदान कर मुक्त होते थे, जिससे गुप्त साम्राज्य के आय को काफी क्षति पहुँची होगी। इसके अतिरिक्त इनका अधिपत्य उठ जाता था और वास्तविक सत्ता भोगताओं के हाथ में आ जाती थी। इससे यही हानि हुई कि दान वाले क्षेत्र के लोग, जिसे दान प्राप्त होता था, उसे ही अपना स्वामी समझने लगते थे, न कि गुप्त सम्राट को। फलस्वरूप इन क्षेत्रों में सम्राट का प्रभाव क्षीण ही रह जाता था।

मुक्तिदान प्रणाली

गुप्त साम्राज्य के अंतिम दिनों में श्रेणियाँ बहुत ही शक्तिशाली हो गई थी और सही अर्थ में उन्हें पूर्ण राजनीतिक और आर्थिक स्वायत्ता प्राप्त थी। ~~कालाचुरी~~ अभिलेख से इस बात की पुष्टि होती ~~है कि~~ इस समय की श्रेणियाँ न केवल अपने सिक्के प्रचलित करती थी वरन अपनी स्वतंत्र एक सेना भी रखती थी। अतः केन्द्रीय शक्तियों का प्रोत्साहन देने में गुप्त काल की श्रेणियों का एक बड़ा हाथ था।

श्रेणियों का शक्तिशाली होना

गुप्त काल के कई प्रशासकों का पद वंशानुगत हो गया था, जिससे प्रान्तों के केन्द्र का प्रभाव घटता जा रहा था। जैसे नायक एक पद के प्रशासक अपने प्रशासकीय इलाके की सभी आय को तो हड़प कर ही जाते थे, इसके अतिरिक्त उनमें से कई प्रशासक ऐसे भी थे जो तीन पीढ़ियों से अपने पद पर बने हुए थे, यहाँ तक कि कुमार मात्य और वैशाली का अमात्य पद भी वंशानुगत हो गया था।

प्रशासकों का वंशानुगत होना

सैद्धान्तिक तौर पर सभी

प्रशासकों का पद सम्राट की इच्छा पर निर्भर करता था परन्तु व्यवहारिक तौर पर ये पदाधिकारी अपनी स्थानीय शक्ति के कारण अपने स्थान पर जमे रहते थे अतः प्रान्तीय प्रशासक भी केन्द्रीय नियंत्रण के अभाव के अधिक स्वतंत्र और अति प्रभावशाली हो गए थे।

स्वतंत्र स्थानीय संस्थाओं की संख्या के वृद्धि के कारण सामन्तो और पराधीन नरेशो को गुप्त साम्राज्य का प्रतिरोध करने में बड़ी सहायता मिली। स्थानीय प्रशासक भी इन स्वतंत्र इकाइयों ने अपनी राजभक्ति सम्राट को छोड़कर अपनी अति समीप के स्वामियो या सामन्तो की ओर बदल दी थी और उन्हें गुप्त साम्राज्य का मुकाबला करने के लिए आर्थिक एवं सैन्य सहायता भी पहुंचायी। पराधीन नरेशो को इस स्थानीय शक्ति का एक बहुत बड़ा कारण यह था कि बाद के चलकर उन्हें भी भूमिदान देने के कारण स्थानीय प्रजा इन्हें ही अपना सबकुछ समझने लगी थी। 550 ई० का एक अभिलेख गया जिले से प्राप्त हुआ है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समय गुप्त सम्राट के सामन्तो और बड़े प्रशासको को बिना सम्राट की आज्ञा लिये ही भूमिदान करने का हक प्राप्त था।

गुप्त काल के अन्त तक गुप्त सम्राटों को बड़ी-नौकरशाही और सेना की आवश्यकता नहीं रह गयी थी क्योंकि वास्तविक प्रशासकीय अधिकार सामन्तों एवं दान भोगताओं के हाथों में आ गयी थी। सेना में भी काफी कटौती हो गयी थी। गुप्त सरकार के पास इतना साधन नहीं रह गया था कि वह एक बड़ी सेना रख सके। स्थानीय प्रशासको पर से केन्द्रीय नियंत्रण उठ चुका था। गुप्त साम्राज्य अन्दर से बिलकुल खोखला हो चुका था और विरोधी शक्तियों को रोकने के योग्य नहीं रह गया था। अतः गुप्त साम्राज्य के पतन में उपर्युक्त सभी मौलिक कारण पाये जाते हैं।